रात्रि क्लास 5/6/68 ओमशान्ति शिवबाबा और वर्सा याद है?

यह है सच्चा–2 ईश्वरीय परिवार। फिर होगा दैवी परिवार। ईश्वरीय परिवार बड़ा या दैवी परिवार बड़ा? सारा मदार है पोज़ीशन पर। यहाँ तुम्हारा रॉयल रॉयलटियस पोज़ीशन है। बाकी तुम्हारे पास जो आते हैं वह कैसे–2 आते हैं सो तो तुम देखते हो। यह कोई समझते नहीं हैं कि हम वैश्यालय के निवासी हैं। हम विषस (विषियस) हैं। समझाने लिए बच्चों को मेहनत बहुत पड़ती है; क्योंकि समझाने से ट्र(ा)न्सफर करना है। मनुष्य से देवता बनाना है। मनुष्यों का कितना कैरेक्टर्स सुधरता है। कहाँ देवताएँ कहाँ मनुष्य। रात–दिन का फ़र्क पड़ जाता है, कैरेक्टर्स में। अभी तक भी बच्चे बहुत हैं जो अपनी चलन सुधारें तो अच्छा पद पा सकते हैं। आसुरी चलन से दैवी चलन में लाना बाप का ही काम है। और कोई सिखला न सके। तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो, बाबा आया हुआ है, शूद्र से बदली कर ब्राह्मण बनाने। फिर ब्राह्मण से चेंज हो देवता बनेंगे। यह है हंसों का संगमयुग। हंस कोई पक्षी नहीं है। इन ज्ञान रत्नों की कितनी वैल्यु है। बच्चों का वातावरण, चलन बड़ी अच्छी होनी चाहिए। रोज़ रात को देखना चाहिए हमारे में आसुरी चलन होगी तो नापस हो जावेंगे। स्वर्ग़ में जा न सकेंगे। हरेक को अपने चाल को देखना है। अपने ऊपर कृपा करनी है। श्रीमत पर चलना है। बाप रास्ता बताते हैं, जितना बाप को याद करेंगे उतना ख़ाद निकलेगी। तुम नब्ज़ तो सभी के देखते होंगे। हमारे धर्म का कोई है। तुम ढूँढ़ते हो सैम्पलिंग लगाने लिए। जंगल के मनुष्य जंगल के ही सैम्पलिंग लगाते रहते हैं। उनको यह पता नहीं है यह दैवी फूलों का बग़ीचा बना रहे हैं। जिसकी आयु भी कितनी बड़ी होती है। तुम सतयुग के मालिक बनने वाले हो। यही खुशी बच्चों को होनी चाहिए। बाबा आया हुआ फिर से वर्सा देने लिए।